शानदार

उत्तम गुणवत्ता की वजह से दूसरे राज्यों में भी पसंद किया जाता है नांगल में बना गुड़

जर्मनी-कनाडा तक पहुंच रही बिजनौर के गुड़ की मिठास

अरविंद कुमार/निखिल चौहान

नांगलसोती (बिजनौर)। कभी बासमती चावल की खुशबू के लिए मशहूर रही बिजनौर की धरती अब लोगों की जुबां पर गुड़ की मिठास घोल रही है। जनपद में खासकर नांगल सोती क्षेत्र के कोल्हुओं पर बना गुड़ भारत के विभिन्न राज्यों के अलावा जर्मनी और कनाडा तक पहुंच रहा है। इसकी पहचान किसी ब्रांड से नहीं बल्कि नांगलसोती गांव के नाम से है। इसके अलावा अफजलगढ़ और रेहड़ इलाके में बनने वाले गुड़ की मांग उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल में सर्वाधिक रहती है।

नांगलसोती क्षेत्र में प्रतिवर्ष 30 से अधिक कोल्हुओं का संचालन किया जाता है, जिन पर प्रतिदिन करीब पांच हजार क्विंटल गन्ने की पेराई कर 500 से 600 क्विंटल गुड़ तैयार किया जाता

है। कोल्हू स्वामी राजवीर काकरान, नितिन, अनमोल, ओमवीर, मोनू ने बताया कि यहां क्षेत्र के कुशल कारीगरों द्वारा गुड़ तैयार किया जाता है। यह गुड़ मिठास और छोटे आकार के लिए जिले सहित दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड में भी सप्लाई होता है। दूर दराज से लोग कोल्हुओं पर गुड़ खरीदने पहुंचते हैं। किरतपुर के कई कारोबारी रोजाना नांगल से करीब 100 क्विंटल गुड़ खरीद कर राजस्थान, गुजरात, हरियाणा पहुंचाते हैं। हाल ही में हरियाणा के एक कारोबारी डेढ़ क्विंटल गुड़ खरीद कर ले गए हैं। नांगल क्षेत्र के गुड़ को जर्मनी, कनाडा, हॉलैंड और दुबई में रहने वाले लोग भी पसंद कर रहे हैं।

बिजनौर निवासी मनोज राजपूत अपने जर्मनी में रहने वाले रिश्तेदार चकित राजपूत के यहां प्रतिवर्ष गुड़ पहुंचाते हैं। मनोज राजपूत ने बताया कि करीब 10 किलोग्राम नांगल के कोल्हू का गुड़ ले जाते हैं। उधर, बिजनौर में एसबीआई के पूर्व अधिकारी सुनील चौधरी जर्मनी में बेटी इला सिंह और अमेरिका में बेटे सोहेल सिंह के लिए करीब 10-10 किलोग्राम गुड़ पहुंचाते हैं। जिला गन्ना अधिकारी पीएन सिंह ने बताया कि गुड़ की गुणवत्ता भोगोलिक स्थिति, फसल में कीटनाशक और रसायन के कम प्रयोग पर निर्भर करती है। संवाद

हाथरस के आलू की अंतरराष्ट्रीय उड़ान

हाथरस। यूरोप और चीन में ऊर्जा संकट, खराब मौसम के चलते वहां का खाद्य प्रसंस्करण उद्योग दबाव में है, ऐसे में हाथरस का आलू बेहतरीन गुणवत्ता के दम पर वैश्विक बाजार में अपनी पहचान बना रहा है।

इस साल जिले से होने वाले आलू निर्यात में करीब पांच प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। भारत के कुल आलू निर्यात में लगभग छह प्रतिशत हाथरस से जा रहा है। निर्यात से जुड़े सादाबाद निवासी राजेश चौधरी ने बताया कि यूरोप व चीन में आलू के प्रोसेसिंग उद्योग में बिजली की बढ़ी कीमतें, जलवायु प्रतिकूलता और उत्पादन लागत में इजाफा होने से बाजार में एक खालीपन पैदा हुआ, जिसे हाथरस के किसानों ने समय पर आपूर्ति और कम लागत के सहारे भर दिया। संवाद